CHAPTER	
1	**Introduction to Micro Economics (सूक्ष्म अर्थशास्त्र) : एक परिचय**

CHAPTER 1

Introduction to Micro Economics (सूक्ष्म अर्थशास्त्र) : एक परिचय

[1] (स) अर्थशास्त्र मनुष्य के साधारण व्यवसाय का अध्ययन है, यह कथन ''अल्फ्रेड मार्शल'' द्वारा दिया गया है।

[2] (अ) सूक्ष्म आर्थिक सिद्धान्त आर्थिक सिद्धान्त की वह शाखा है जो संसाधनों के प्रभारण की समस्या से निपटती है। अर्थात् इसमें हम एक व्यक्ति, फर्म या उद्योग के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक व्यवहार करते हैं।

[3] (स) एक अर्थव्यवस्था को पूँजीवादी या एक स्वतंत्र बाजार अर्थव्यवस्था कहा जाता यदि उनमें निम्न लक्षण विद्यमान हो। इस अर्थव्यवस्था में उद्यमी अधिकतम लाभ कमाना चाहता है। एक अर्थव्यवस्था बाजार की माँग और पूर्ति की केन्द्रीय समस्याओं के समाधान हेतु मूल्य तंत्र का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि माँग और पूर्ति दोनों मूल्य पर निर्भर करती है। इस प्रकार एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में साधन के रूप में मूल्य का प्रयोग करता है।

[4] (अ) व्यापक अर्थशास्त्र के अनुसार इस बात का अध्ययन है कि कैसे कारपोरेट आयकर की दर में वृद्धियाँ राष्ट्रीय बेरोजगारी को प्रभावित करेंगी इसका सारता से अध्ययन किया जाता है।

[5] (ब) यदि कोई बिन्दु, उत्पादन संभावना वक्र के भीतर पड़ता है तो यह संसाधनों का अप्रयुक्त होना प्रदर्शित करता है।

[6] (द) बाजार अर्थव्यवस्था अर्थात् पूँजी अर्थव्यवस्था में उत्पादक तथा उपभोक्ता के निर्णय बाजार की माँग तथा आपूर्ति पर आधारित होते हैं पूँजीवादी अर्थव्यवस्था मूल्य अवधारणा के ऊपर निर्भर रहती है।

[7] (ब) एक स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था के अनुसार मूल्य मांग व आपूर्ति के अनुसार बढ़ते घटते रहते हैं यह सब बाजार व्यवस्था के अनुसार व्यवस्थित होता है।

[8] (स) सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किसी एक फर्म या कम्पनी के अध्ययन का बोध होता है इस प्रकार गुणक मूल्यांकन इसके अन्तर्गत आता है।

[9] (अ) एक स्वतन्त्र बाजार अर्थव्यवस्था में जब उपभोक्ता किसी माल के क्रय को बढ़ा देते हैं तथा मांग का स्तर आपूर्ति से बढ़ जाता है तो मूल्य बढ़ने की प्रवृत्ति दिखती है।

[10] (ब) आगमन विधि के अन्तर्गत जाँच पड़ताल के लिये महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन तथा समीक्षा के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं, इस मामले में तर्क विशिष्ट से सामान्य की ओर जाते हैं। निष्कर्ष व्यक्तिगत उदाहरणों के अवलोकन पर आधारित होते हैं।

[11] (अ) रॉबिन्स के अनुसार, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव व्यवहार का लक्ष्यों और सीमित एवं वैकल्पिक उपयोग वाले साधनों के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करता है"।

[12] (द) PPC वक्र पर सभी बिन्दु यह प्रदर्शित करते हैं कि वस्तुएँ और सेवाएँ न्यूनतम लागत पर उत्पादित की जा रही है तथा कोई भी संसाधन नष्ट नहीं हो रहा है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं होता है कि वृद्धि का कोई अस्तित्व नहीं है। जब अर्थव्यवस्था में तकनीकी में सुधार होता है अर्थात् वैज्ञानिक और इंजीनियर उत्पादन बढ़ाने के नये तरीके खोज लेते हैं तो उत्पादन सम्भावना वक्र अन्तः स्थित हो जाता है। इसी प्रकार पूँजी निवेश का प्रभाव यह होता है कि

आर्थिक क्रियाओं में विस्तार हो जाता है जिससे PPC वक्र दायीं ओर स्थित हो जाता है। अन्ततः जनसंख्या में वृद्धि से वस्तुओं की माँग अधिक हो जाती है जो PPC वक्र को दायीं ओर स्थित कर देता है।

[13] (ब) PPC वक्र का मुड़ाव अवसर लागत पर निर्भर करता है। एक सतत् अवसर लागत बताती है कि दिये गये संसाधन दोनों वस्तुओं में समान रूप से उपयुक्त है। इसलिए जब अवसर लागत नियत (सतत्) होती है तब PPC वक्र एक सीधी रेखा होगा।

[14] (स) अर्थशास्त्र के अध्ययन के अनुसार मनुष्य यह अध्ययन करता है कि किस प्रकार समाज सीमित संसाधनों का प्रबन्ध करें।

[15] (द) मिश्रित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत हम सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र का साथ–साथ होना पाते हैं इस मिश्रित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत वस्तु का मूल्य निर्धारण प्लानिक कमीशन तथा बाजार की स्थितियों (दबाव) के अन्तर्गत होता है।

[16] (ब) अर्थशास्त्र एक प्रकार से गत्यात्मक प्रगति एवं विकास का विज्ञान है जो प्रसिद्ध अर्थशास्त्री पाल.ए. सैम्युलसन द्वारा इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है। इनके अनुसारः– "अर्थशास्त्र" उस विषय का अध्ययन है जिसमें यह ज्ञात किया जाता है कि किस प्रकार व्यक्ति एवं समाज चुनाव करते हैं व्यक्ति व समाज वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों का चुनाव विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में लगाने, उपभोग हेतु वर्तमान और भविष्य में उन्हें समाज के व्यक्तियों या समूहों में वितरित करने के लिये किस प्रकार करते हैं ऐसा चुनाव मुद्रा के उपयोग द्वारा अथवा बिना मुद्रा के उपयोग द्वारा भी किया जा सकता है।

[17] (ब) एक मुक्त बाजार की अर्थव्यवस्था अपनी प्रमुख समस्याएं बाजार व्यवस्था के अन्तर्गत हल करती हैं इसको सामान्यतः आर्थिक अर्थव्यवस्था भी कहते हैं यह इस समस्या को उत्पन्न करती है कि किस प्रकार अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्ति के लिये सीमित साधनों का प्रयोग करें।

[18] (अ) अर्थव्यवस्था के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण अल्फ्रेड मार्शल के द्वारा दिये गये थे इनके अनुसार आदर्शमूलक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र मूल्य निर्णयन का समावेश करता है। आदर्श मूलक अर्थशास्त्र कल्याण की विचार धारा से सम्बन्ध रखता है। यह प्रकृति में निर्धारणीय होता है तथा वर्णन करता है कि 'क्या कुछ होना चाहिये'। उदाहरण के लिये प्रश्न जैसे राष्ट्रीय आय का स्तर क्या होना चाहिये, मजदूरी दर क्या होनी चाहिये, लोगों के बीच राष्ट्रीय उत्पादन के फल कैसे वितरित किये जाने चाहिये।

[19] (द) सामूहिक स्वामित्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का एक उदाहरण नहीं है। पूंजीवादी एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के सभी साधन लाभ के लिये निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में तथा नियन्त्रण में होते हैं। संक्षेप में, निजी सम्पत्ति पूंजीवाद का मेरूदण्ड होती है तथा लाभ उद्देश्य होता है, इसकी प्रचालक शक्ति।

[20] (स) मिश्रित अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत एक ऐसा तन्त्र विकसित किया जाता है जो नियन्त्रित अर्थव्यवस्था तथा बाजार अर्थव्यवस्था दोनों के आदर्श लक्षणों का समावेश करता है।

बीसवीं शताब्दी के एक महानतम् अर्थशास्त्री J.M. Keyner के अनुसार समाजवाद तथा पूँजीवाद के एक समझौते के रूप में मिश्रित अर्थव्यवस्था के विचार का पक्ष लिया है। इसका अर्थ है कुछ भाग राज्य द्वारा तथा कुछ भाग का निर्णय निजी साहसी द्वारा होता है

[21] (स) उत्तर 3 देखें।

[22] (द) मानवीय आवश्यकताएँ असीमित संसाधनों की सीमितता तथा उनका वैकल्पिक प्रयोग इसको सामान्यतः आर्थिक समस्या कहा जाता है। प्रत्येक आर्थिक व्यवस्था इन घटकों के कारण क्या उत्पादन करना है, कैसे उत्पादन करना है, किसके लिए उत्पादन करना है, आर्थिक विकास के लिए क्या प्रावधान है, का सामना करती है।

[23] (ब) व्यष्टि अर्थशास्त्र को मूल्य सिद्धान्त भी कहते हैं।

[24] (ब) विकसित अर्थव्यवस्थाओं के पास अधिक प्रौद्योग होते हैं इसलिए वह पूँजी सघन तकनीक का प्रयोग करते हैं ताकि उनकी उत्पादन की लागत न्यूनतम आये।

[25] (द) उत्पादन सम्भावना वक्र की ढाल यह बताती है कि दिये गये संसाधन दोनों वस्तुओं को बनाने के लिए उपयुक्त हैं। इसलिए जब अवसर लागत सतत् होगी तो उत्पादन सम्भावना वक्र सरल रेखा होगी।

[26] (स) अल्फ्रेड मार्शल ने भौतिक कल्याण के विज्ञान की परिभाषा की थी। यह एक तरफ सम्पत्ति का अध्ययन है और साथ ही साथ मनुष्य का अध्ययन है।

[27] (अ) दो आधारभूत तथ्य होते हैं :

(i) मनुष्य की आवश्यकतायें असीमित होती हैं

(ii) इन आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के साधन अपेक्षाकृत सीमित होते हैं।

[28] (द) सूक्ष्म अर्थशास्त्र में हम एक व्यक्ति, फर्म या उद्योग के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक व्यवहार का अध्ययन करते हैं।

यह सम्मिलित करता है :

(i) उपभोक्ता के व्यवहार से

(ii) वस्तु के मूल्य से

(iii) साधन के मूल्य से आदि

[29] (द) एक सकारात्मक या शुद्ध विज्ञान विभिन्न चरों के बीच कारण–परिणाम सम्बन्धों की समीक्षा करता है लेकिन यह मूल्य निर्णयन से नहीं गुजरता प्रोफेसर रॉबिन्स ने विज्ञान के सकारात्मक पहलुओं को उजागर किया।

[30] (अ) मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था के गुणों से मिलकर बना है। मिश्रित अर्थव्यवस्था का सबसे ज्यादा आवश्यक गुण है निजी एवं जन उद्योगों का साथ में होना।

[31] (अ) सूक्ष्म अर्थशास्त्र विशेष फर्मो, विशेष ग्रहस्वामियों, व्यक्तिगत् मूल्य, मजदूरी आय , व्यक्तिगत् उद्योगों तथा विशेष वस्तुओ का अध्ययन है इसलिए यह सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अध्ययन का भाग है।

[32] (द) समष्टि अर्थशास्त्र में हम आर्थिक स्थिति को राष्ट्रीय स्तर पर समझते हैं जैसे भारत में बेरोजगारी की समस्या, देश में बढ़े हुए मूल्यों की समस्या, आदि है अतः ये सभी समष्टि अर्थशास्त्र के विषय के अन्तर्गत आते हैं।

[33] (द) एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में कोई नियोजन संस्था नहीं होती, जो कि यह तय करे कि किसका, कब तथा किसके लिए उत्पादन होना है। अतः इस अर्थव्यवस्था में साधनों का आवंटन माँग तथा पूर्ति के द्वारा होता है जिसे मूल्य तंत्र व्यवस्था कहते हैं।

[34] (अ) अर्थशास्त्र को सम्पत्ति का विज्ञान एडम स्मिथ तथा जे बी सेय ने माना था।''राष्ट्र की सम्पत्ति के कारणों और प्रकृति की खोज का विज्ञान''– एडम स्मिथ

' 'विज्ञान जो सम्पत्ति का विवेचन करता है'' – जे बी सेय

[35] (अ) समाजवादी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता है आय की समानता। शिक्षा तथा अन्य सुविधाएं समान रूप से प्राप्त कराई जाती है जिससे असमानता हट जाती है।

[36] (द) एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें पूँजीवाद एवं समाजवादी दोनों के गुण हो उसे हम मिश्रित अर्थव्यवस्था कहते हैं। इसकी प्रमुख विशेषताए हैं:

(अ) मिश्रित अर्थव्यवस्था एक नियोजित अर्थव्यवस्था होती है अर्थात् एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें सरकार के पास एक स्पष्ट तथा निश्चित आर्थिक योजना होती है।

(ब) एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में मूल्यन की दोहरी प्रणाली विद्यमान रहती है अर्थात् मूल्यों का निर्धारण योजना आयोग एवं मूल्य व्यवस्था की प्रणाली द्वारा किया जाता है।

(स) एक मिश्रित अर्थव्यवस्था में क्षेत्रीय संतुलन विकास की भी आशा की जाती है। इसके लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को, पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित किया जाता है।.

[37] (अ) आदर्शमूलक विज्ञान कल्याण की विचारधारा से सम्बन्ध रखता है। यह वर्णन करता है क्या कुछ होना चाहिए। यह तथ्यों पर आधारित नहीं होता है। अर्थशास्त्र के नैतिक पहलू को आदर्शमूलक विज्ञान कहा जा सकता है।

[38] (स) मिश्रित अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें पूँजीवाद एवं समाजवाद दोनों के गुण पाए जाते हैं। इस अर्थव्यवस्था में मूल्य निर्धारण की दोहरी प्रणाली अपनाई जाती है अर्थात् आवश्यक वस्तुओं का मूल्य निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है तथा अन्य वस्तुओं का निजी उद्योगों द्वारा।

[39] (ब) आगमन विधि के अन्तर्गत जाँच पड़ताल के लिए महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन तथा समीक्षा के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसी विधि के अन्तर्गत तर्क विशिष्ट से सामान्य तक जाते हैं।

[40] (द) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में कोई सरकारी दखल नहीं होती। यहाँ साधनों का आवंटन उनकी माँग के अनुसार किया जाता है। उत्पादक वह वस्तुएं बनाएगा जो जनता माँगेगी बिना सामाजिक कल्याण के बारे में सोचे। इसलिए इस प्रणाली में मूल्य प्रणाली या बाजार प्रणाली का उपयोग होता है।

[41] (अ) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का एक **महत्वपूर्ण नियम यह है कि यह अर्थव्यवस्था सरकार के हस्तक्षेप से मुक्त होती है** तथा यह बाजार की ताकतों पर चलती है तथा विलासिताओं में वृद्धि करती है। इस प्रकार पूँजीवादी अर्थव्यवस्था विलासिता में वृद्धि करती है।

[42] (ब) रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र की निम्न परिभाषा दी है–

''अर्थशास्त्र उन समस्याओं का अध्ययन करता है जो संसाधनों की संकीर्णता के कारण उत्पन्न हुई है।''

इसलिये, अर्थशास्त्र चयन का विज्ञान है जो वैकल्पिक उपयोगों को बताता है।

[43] (द) व्यापक अर्थशास्त्र में हम माद्य मात्रा योगों के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन करते हैं जैसे कुल उत्पादन, कुल बचत इत्यादि। दिये गये विकल्पों में केवल शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन का अध्ययन ही व्यापक अर्थशास्त्र में होता है।

[44] (ब) उत्पादन सम्भावना वक्र दो मालों के उत्पादन की विभिन्न दरों को प्रदर्शित करता है जो सीमित उत्पादकीय संसाधनों के साथ प्रभावी तौर पर उत्पादन कर सकते हैं। मान लेते हैं केवल दो ही वस्तुएं हैं अतः एक वस्तु को तैयार करने की अवसर लागत दूसरी वस्तु के लिये किये गये त्याग के रूप में होती है। जैसे–जैसे हम एक वस्तु का उत्पादन बढ़ाते जाते हैं वैसे–वैसे ही हमें दूसरी वस्तु की इकाइयों का त्याग करना पड़ता है।

इस प्रकार अवसर लागत बढ़ती जाती है। अवसर लागत के इसी सिद्धान्त के कारण 'उत्पादन सम्भावना वक्र' मूल बिन्दु के प्रति उत्तल होता है।

[45] (द) उत्पादन सम्भावना वक्र का आकार सीमान्त अवसर लागत पर निर्भर करता है। सतत् अवसर लागत बताती है कि प्रयुक्त संसाधन दोनों वस्तुओं के उत्पादन में समान योगदान देते हैं। इसलिये यदि अवसर लागत सतत् रहती है तो उत्पादन सम्भावना वक्र एक सीधी रेखा होगी।

[46] (ब) एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में 'क्या', 'किस प्रकार' तथा 'किसके लिये उत्पादन किया जाना है' के निर्णय हेतु कोई केन्द्रीय अधिसत्ता नहीं होती है। ऐसी अर्थव्यवस्था अपनी केन्द्रीय समस्याओं के समाधान हेतु बाजार की मांग व पूर्ति की अत्यैक्तिक शक्तियों या मूल्य तंत्र व्यवस्था का प्रयोग करती है।

[47] (अ) निगमन विधि और आगमन विधि दोनों ही परस्पर अजनबी नहीं हैं वरन् किसी भी वैज्ञानिक जाँच में उनको साथ–साथ काम में लाया जाता है। निष्कर्षों को तर्क की निगमन विधि से निकाला जाता है तथा जीवन के ठोस तथ्यों के अवलोकन की आगमन विधि द्वारा सत्यापित किया जाता है।

[48] (अ) मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था या पूँजीवादी अर्थव्यवस्था एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के सभी साधन लाभ के लिए निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में तथा नियन्त्रण में होते हैं। इसलिए लाभ उद्देश्य इस अर्थव्यवस्था की प्रचालक शक्ति होती है।

[49] (अ) प्रो0 रॉबिन्स के अनुसार, 'अर्थशास्त्र को साध्यों के बीच तटस्थ होना चाहिए।' मानवीय इच्छाएँ असीमित होती हैं। एक इच्छा खत्म होने पर दूसरी इच्छा उत्पन्न हो जाती हैं।

[50] (ब) पूँजीवादी एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के सभी साधन लाभ के लिए निजी व्यक्तियों के स्वामित्व व नियन्त्रण में होते हैं। इस आर्थिक प्रणाली में सरकार आर्थिक कामकाज के प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं करती हैं।

[51] (अ) एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में कोई नियोजन संस्था नहीं होती जो कि यह तय करे, कि किसका, कब तथा किसके लिए उत्पादन होना है। अतः इस अर्थव्यवस्था में साधनों का आवंटन माँग तथा पूर्ति के द्वारा होता है। जिसे मूल्य तन्त्र व्यवस्था कहते हैं।

[52] (द) आदर्शमूलक तत्व भौतिक कल्याण से सम्बन्धित है। इसमें अर्थशास्त्र मूल्य निर्णयन का समावेश करता है। यह प्रकृति में निर्धारणीय होता है तथा वर्णन करता है कि 'क्या कुछ होनी चाहिये'। उदाहरण के लिए, जैसे राष्ट्रीय आय का स्तर क्या होना चाहिये, मजूदरी दर क्या होना चाहिये।

इसलिए **आदर्शमूलक अर्थव्यवस्था** सही विकल्प है।

[53] (ब) पूँजीवाद एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के सभी साधन लाभ के लिए निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में तथा नियन्त्रण में होते हैं। निजी सम्पत्ति का अधिकार अर्थात् उत्पादकीय घटक जैसे भूमि, कारखानें, मशीनें, खानें आदि निजी स्वामित्व में होते हैं। इन घटकों के स्वामी जिस तरीके से चाहे इनको काम में लाने के लिए स्वतन्त्र होते हैं।

अतः **विकल्प (ब)** सही है।

[54] (अ) एक सकारात्मक या शुद्ध विज्ञान विभिन्न चरों के बीच कारण–परिणाम सम्बन्धों की समीक्षा करता है लेकिन यह मूल्य निर्णयन से नहीं गुजरता है। यह बताता है कि क्या करना चाहिये तथा क्या नहीं करना चाहिये।

अतः **विकल्प (अ)** सही है।

[55] (द) एक मिश्रित अर्थव्यवस्था सरकार द्वारा नियोजित अर्थव्यवस्था होती है। समाजवादी अर्थव्यवस्था को केन्द्रीय नियोजित अर्थव्यवस्था के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसमें सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों को पूरा करने की जिम्मेदारी केन्द्र सत्ता की होती है।
इसलिए **विकल्प (द) इनमें से कोई नहीं** सही है।

[56] (स) अनेक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने धन के रूप मे अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ दी है। जे.बी.से. के अनुसार अर्थशास्त्र विज्ञान है जो सम्पत्ति का विवेचन करता है।

[57] (ब) अर्थशास्त्र में उत्पादन संभावना–व्रक (PPC) या परिवर्तन व्रक एक ऐसा ग्राफ है, जो दो मालो के उत्पादन की विभिन्न दरों को प्रदर्शित करता है। यह एक व्यक्ति या ग्रुप सीमित उत्पादकीय संसाधनो के साथ प्रभावी तौर पर उत्पादन कर सकते हैं।

[58] (ब) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लक्षण निम्न है।
(1) निजी सम्पत्ति का अधिकार
(2) उपक्रम की स्वतन्त्रता
(3) उपभोक्ताओं द्वारा चयन की स्वतन्त्रता
(4) लाभ उद्देश्य
(5) प्रतिस्पर्द्धा
(6) आय की विषमताएँ
इस प्रकार उपभोक्ताओं के चयन के अधिकार पर रोक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का लक्षण नहीं है।

[59] (ब) निजी तथा सार्वजनिक उपक्रम दोनों का ही सह–अस्तित्व, वास्तव में एक मिश्रित अर्थव्यवस्था के लक्षण है। इसके तीन क्षेत्र है।
(1) निजी क्षेत्र
(2) सार्वजनिक क्षेत्र
(3) मिला–जुला क्षेत्र

[60] (अ) साहसी का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, आविष्कार। आविष्कार के अलावा उसके पास दूसरे कार्य भी होते हैं जैसे निर्णय लेना, प्रबन्धन कार्य, संगठनात्मक कार्य आदि।

[61] (द) आगमन विधि के अन्तर्गत जाँच पड़ताल के लिए, महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन तथा समीक्षा के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं इस मामले में तर्क विशिष्ट से सामान्य की ओर जाते हैं। निष्कर्ष व्यक्तिगत उदाहरणों के अवलोकन पर आधारित होते हैं।

[62] (अ) अर्थशास्त्र में समय तत्व प्रति दिन, प्रति सप्ताह, प्रति माह, प्रति वर्ष आदि लिये जाते हैं। इस प्रकार इसे कैलेंडर समय ले लिया जाना चाहिये।

[63] (ब) PPC वक्र पर सभी बिन्दु बताते हैं कि वस्तुओं और सेवाओं को न्यूनतम लागत पर तैयार किया जाता है तथा कोई संसाधन नष्ट नहीं किया जाता है। जब अर्थव्यवस्था में तकनीकी सुधार होते हैं तब PPC वक्र बाहरी तौर पर उठेगा तथा दायी ओर झुकेगा जो बताता है कि पहले की अपेक्षा दोनों वस्तुओं की अधिक मात्राओं को तैयार किया जा सकता है।

[64] (अ) लोगों की सभी इच्छाएँ समान महत्व की नहीं होती हैं तथा वह पूरी भी नहीं की जा सकती है।

[65] (स) उत्पादन सम्भावना वक्र का दूसरा नाम 'परिवर्तन वक्र' भी है।

[66] (ब) **सम्पत्ति का विज्ञानः** यद्यपि भौतिक सम्पदा को पाने तथा बढ़ाने की गतिविधि उतनी ही प्राचीन है जितनी सभ्यता, तथापि धन सृजक गतिविधियों का एक व्यवस्थित अध्ययन लगभग 235 वर्ष पूर्व (1776 में) शुरू हुआ था, जब अर्थशास्त्र के जनक **एडम स्मिथ** ने "The Nature and causes of Wealth of Nations" को प्रकाशित किया।

[67] (स) सूक्ष्म अर्थशास्त्र विशेष फर्मों, विशेष गृहस्वामियों, व्यक्तिगत मूल्य, मजदूरी, आय, व्यक्तिगत उद्योगों तथा विशेष वस्तुओं का अध्ययन है। हम मुख्यतः निम्न का अध्ययन करते हैंः
(i) उत्पाद की कीमतें, (ii) उपभोक्ता व्यवहार, (iii) उत्पादन साधनों की कीमतें, (iv) समाज के एक वर्ग की आर्थिक दशाएँ, (v) फर्मों का अध्ययन, (vi) एक उद्योग का स्थान निर्धारण।

[68] (ब) **सूक्ष्म और व्यापक अर्थशास्त्र एक–दूसरे के पूरक होते हैं,** जैसे राष्ट्रीय आय तब तक नहीं बढ़ सकती है जब तक व्यक्तिगत फर्मों तथा कारखानों में उत्पादन नहीं बढ़ जाता।

[69] (द) PPF का प्रयोग करते हुए बेरोजगारी में कमी को PPF के आन्तरिक बिन्दु से PPF पर स्थित बिन्दु की ओर संवहन करता है।

[70] (अ) सूक्ष्म अर्थशास्त्र में हम एक व्यक्ति, फर्म या उद्योग के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक व्यवहार का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार यह सभी यूनिटों को एकजुट करने की अपेक्षा एक यूनिट विशेष का अध्ययन होता है।

[71] (द) जे0 बी0 से के अनुसार, ''अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो सम्पत्ति का विवेचन करता है''।

[72] (ब) चयन की स्वतंत्रता पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का एक लाभ है।

[73] (ब) राबिन्स द्वारा दी गयी अर्थशास्त्र की परिभाषा ''सीमित उद्देश्य'' से सम्बन्धित नहीं है। बल्कि यह परिभाषा असीमित उद्देश्य से सम्बन्धित है।

[74] (स) पूँजीवाद एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें उत्पादन के सभी साधन लाभ के लिए निजी व्यक्तियों के स्वामित्व में तथा नियन्त्रण में होते हैं।

[75] (द) उत्पादन सम्भावना वक्र, परिवर्तन वक्र के नाम से भी जाना जाता है।

[76] (स) **आगमन विधि–** इस विधि के अन्तर्गत निर्णय परीक्षणों के संग्रह एवं विश्लेषण के आधार पर किया जाता है। संक्षेप में सामान्यीकरण से विशिष्टीकरण को आगमन विधि कहते हैं।

[77] (स) शुम्पीटर ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को आक्सीजनटेन्ट का पूँजीकरण कहा है। इनके अनुसार यह केवल पूँजीपतियों द्वारा कामगारों को ठगने का एक तरीका है।

[78] (स) उत्पादन सम्भावना वक्र को परिवर्तन वक्र भी कहते हैं। यह वह ग्राफ है जो दो वस्तुओं की विभिन्न उत्पादन दरों को प्रदर्शित करता है जो एक व्यक्ति अपने सीमित संसाधनों से कुशलता पूर्वक उत्पादन कर सकता है।

[79] (ब) प्रत्येक अर्थव्यवस्था चाहे वह पूँजीवादी हो, या समाजवादी या मिश्रित अर्थव्यवस्था हो, आवश्यकताओं के सापेक्ष संसाधन सीमित होते हैं। यह अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्या है। केन्द्रीय समस्या को पुनः चार वर्गों में विभाजित किया जाता है, ये हैंः
(i) क्या उत्पादन करें?
(ii) कैसे उत्पादन करें?
(iii) किसके लिए उत्पादन करें?
(iv) आर्थिक विकास की गति को किस प्रकार बढ़ायें?

✿